पारंपरिक व्यंजनो, शर्बतों और वनौषधियों से होती है पथरी की पारंपरिक चिकित्सा

* 180 प्रकार की वनौषधियों का पारंपरिक प्रयोग

* 65 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की अब तक पहचान

नवगठित राज्य छत्तीसगढ़ की वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य मे पथरी की चिकित्सा मे पारंपरिक चिकित्सक 180 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग करते है। इन वनौषधियों का उपयोग मिश्रण के रुप मे होता है। सर्वेक्षणों के माध्यम से अब तक 65 ऐसे पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान की जा चुकी है जो कि पथरी के उपचार के विशेष दक्षता रखते है।

छत्तीसगढ़ के विभिन भागों मे पिछले दस वर्षो से किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि राज्य की जिन वनौषधियों का प्रयोग वृक्क की पथरी को निकालने मे होता है उनमें से अधिक्तर वनौषधियों के पौध भाग वृक्षाकार होते है। पारंपरिक चिकित्सकों का मानना है कि वृक्षाकार आकार प्रकृति द्वारा इस रोग विशेष के लिये बनाये जाने को इंगित करता है। वृक्काकार पत्तियों वाली वनौषधि मुश्कैनी का प्रयोग छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच लेकप्रिय है। यह वनौषधि खरपतवार के रुप मे धान के खेतों व बेकार जमीनों मे उगती है। इसे पथरी के इलाज मे ''गरीबों का साथी'' की उपमा मिली हुई है। मुश्कैनी की साग ग्रामीण अंचलों मे चाव से खायी जाती है। राज्य के बहुत से हिस्सों मे कुल्थी नामक वनौषधि की खेती दाल वाली फसल के रुप में होती है। कुल्थी की दाल का सेवन आम लोगों मे लोकप्रिय है। उनका मानना है कि पथरी के रोगियों के लिये ये दाल विशेष रुप से उपयोगी है। पारंपरिक चिकित्सक भी इससे काफी हद तक सहमत हैं पर उनका मत है कि इस दाल के साथ अन्य भोज्य पदार्थो का सही चयन सही उपचार मे अहम भूमिका निभाता है। वे अधिक मात्रा मे इस दाल के उपयोग के पक्षधर नही है। साथ ही शिलाजीत जैसी औषधियों के साथ इसका सेवन वर्जित है। नयी फसलों के कारण अब राज्य मे कुल्थी की फसल का रकबा कम हो रहा है। जैविक विधियों से उगाई गई कुल्थी का प्रयोग ही पारंपरिक चिकित्सा मे होता है। राज्य के पारंपरिक चिकित्सक पथरी निकलने के बाद भी रोगियों की लंबे समय तक चिकित्सा के पक्षधर है ताकि पथरी का निर्माण दोबारा न हो। रोगी को पेयजल को वनौषधियों से उपचारित कर पीने की सलाह ज्यादातर पारंपरिक चिकित्सक देते हैं क्योंकि उनका मानना है कि पानी और भोजन काफी हद तक इस समस्या के लिये उत्तरदायी है। पारंपरिक चिकित्सकों के बीच वनौषधियों से तैयार शर्बत भी लोकप्रिय है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक रोगियों को लंबे समय तक मौलश्री के फलों का शर्बल पीने की सलाह देते हैं। उत्तरी छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक मुनगा (सहजन) की जड़ों से तैयार काढ़े के प्रयोग के पक्षधर है। काढ़े का प्रयोग वे अपनी निगरानी मे करवाते है। कांकेर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच पानफूटी नामक वनौषधि का प्रयोग लोकप्रिय है। इसके पौध भागों विशेष कर पत्तियों से स्वादिष्ट चटनी तैयार कर रोगियों को दी जाती है। बिलाड़ी क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक वनों मे प्राकृतिक रुप से उगने वाली वनौषधि कोरिया का प्रयोग करते है। इसकी छाल को दही के साथ और जड़ को काढ़े के रुप मे दिया जाता है।

पंकज अवधिया ने आगे बताया कि बहुत सा पारंपरिक ज्ञान अभी भी दूरस्थ क्षेत्रों मे प्रचलन मे है और इसका सही मायने मे दस्तावेजीकरण नही हो पाया है। पथरी की चिकित्सा के महारथी अब बडे शहरों और विदेशों मे लोकप्रिय होने लगे है। दूर - दूर से आने वाले रोगियों की बढ़ती भीड़ इसका स्पष्ट प्रमाण है। पंकज अवधिया का मानना है कि आधुनिक शोध के माध्यम से इस पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक आधार प्रदान कर इसे सदा के लिये प्रमाणिक बनाया जा सकता है।